Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Praudh Prakrit Rachna Saurabh Part-1

Folder No.	002688
Granth Name	Praudh Prakrit Rachna Saurabh Part-1
Author	Kamal Chand Sogani
Publisher	Apbhramsa Sahitya Academy Jaipur
Edition	1
Year	1999
Pages	248

प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ भाग-१

फोल्डर नं.	००२६८८
ग्रन्थ	प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ भाग-१
लेखक	कमलचन्द सोगानी
प्रकाशक	अपभ्रंश साहित्य एकेडमी – जयपुर
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९९९
पृष्ठ	२४८

मुख्य टाईटल
अनुक्रमणिका
आरम्भिक
प्रकाशकीय
सूत्र विवेचन ---------- १-७७
संज्ञा – प्रकरण ---------- ११
सर्वनाम – प्रकरण ---------- ३९
संख्या – प्रकरण ---------- ६५
अन्य सूत्र ---------- ६७
शौरसेनी प्राकृत सम्बन्धी सूत्र ---------- ७६
संज्ञा – शब्दस्वरुप ---------- ७८-१०४
पुल्लिंग शब्द – देव, हरि गामणी, साहु, सयंभू ---------- ७९
नपुंसकलिंग शब्द – कमल, वारि, महु ---------- ८४
स्त्रीलिंग शब्द – कहा, माआ, माआरा, मई, लच्छी, धेणु, बहू ---------- ८७

अतिरिक्त रुप – पिउ, पिअर, कत्तु, कत्तार, अप्प/अत, अप्पाण, अत्ताण, राय/राय, रायण ------- ९४
सर्वनाम – शब्दरुप -- १०५-१४३
पुल्लिंग शब्द – सव्व, त, ण, ज, क, एत, एप्र, ईम, अमु ,अन्न ---------------------------- १०५
नपुंसकलिंग शब्द – सव्व, त, ण, ज, क, एत, एग्र, ईम, अमु, अन्न ------------------------- ११६
स्त्रीलिंग शब्द – सत्वाच ता, णा, ती, जा, जी, का, की, एआ, एई, ईमा, आमी, अमु,
अन्ना--- १२६
तीनों लिंगो में – तुम्ह -- १४०
तीनों लिंगो में – अम्ह -- १४२
संख्यावाचक शब्दस्वरुप -- १४४-१७३
संख्याएँ १ से १०० -- १४५
क्रमवाचक संख्याशब्द --- १६३
अभ्यास (संख्यावाचक शब्द) --- १७१
परिशिष्ट १ सूत्रों में प्रयुक्त सन्धि – नियम--- i
परिशिष्ट २ सूत्रों का व्याकरणिक विश्लेषण --v
परिशिष्ट ३ पाठ ४ के अभ्यास के वाक्यों का अनुवाद--- Lvii
शुद्धि पत्र
सहायक पुस्तकें एवं कोश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org